प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंहनगर (उत्तराखण्ड)

खरीफ ऋतु में मक्के का उत्पादन

पंतनगर। 30 जून 2023। खरीफ ऋतु में मक्के की बोआई का उपयुक्त समय जून का द्वितीय पखवाडा है परन्तु जुलाई के प्रथम सप्ताह तक बुवाई की जा सकती है। अगर बुआई के समय मृदा में नमी कम हो तो पलेवा करके बुआई करनी चाहिए। पंक्तियों की बीच की दूरी 60–75 सें.मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 20–25 सें.मी. रखनी चाहिए। बीज को 4–5 से.मी. की गहराई पर बोना चाहिए। एक हैक्टयर क्षेत्र के लिए संकर प्रजातियों का 20 से 25 कि.ग्रा. बीज तथा संकुल प्रजातियों का 18 से 20 कि.ग्रा. बीज पर्याप्त होता है। बीज एवं मृदा से होने वाले रोगों से बचाव के लिए बीज को थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. या मैंकोजब 50 प्रतिशत कारबेन्डाजीम 25 प्रतिशत डब्लू.एस. से 2.5–3.0 ग्राम/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। खरपतवार नियंत्रण के लिए दो गुड़ाई करनी चाहिए पहली बोआई के 20–25 दिन बाद एवं दूसरी 35–40 दिन बाद करनी चाहिए। रसायनिक विधि से नियंत्रण के लिए बुवाई के तुरन्त बाद एट्राजीन 2 कि. ग्रा. मात्रा प्रति हैक्टर की दर से खेत में डालें। बाद में उगने वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए बुवाई के 20–25 दिन बाद टेम्बोट्राईऑन की 286 मि.ली. मात्रा या टॉप्रामिजोन की 75 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर प्रयोग करनी चाहिए। मोथा के नियंत्रण के लिए हैलोसल्फरोन की 90 ग्राम मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करे। खरीफ ऋतु में सामान्यतः सिंचाइयों की आवश्यकता नही होती है। अगर वर्षा न हो तो सिंचाई करनी पड़ती है। सिंचाई के समय खेत में पानी 5–6 से.मी. की गहराई तक लगायें। पोषक तत्वों के लिए बुवाई से पूर्व खेत में गोबर की सड़ी खाद 10 टन प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करे। मक्के में 120 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस एवं 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करना चाहिए। खरीफ ऋतु में तना भेदक तथा पतझड़ सैनिक कीट (फाल आर्मी वर्म) का प्रकोप में बहुत ज्यादा होता है। इनके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस की 625 मि.ली. मात्रा प्रति हैक्टेयर की दर से 500–600 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें। पतझड़ सैनिक कीट (फाल आर्मी वर्म) लिए निम्बोली के 5 प्रतिशत सत एजेडिरक्टिन का 2.5 ली./है. की दर से छिड़काव करें। 10 प्रतिशत से अधिक क्षति होने की अवस्था में स्पीनोट्राम 11.7 प्रतिशत एससी को 0.5 मि.ली. /लीटर या क्लोरेन्ट्रानीलीप्रोल 18.5 एससी को 0.4 मि.ली./लीटर या थायोमिथेक्सॉम 12 प्रतिशत + लैम्डासाहैलोथ्रीन 9.5 प्रतिशत को 0.2 मि.ली./लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। खरीफ ऋतु में पत्ती झुलसा और रतुआ रोग फसल मे लग जाते हैं। इन रोगो की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब की 2 कि.ग्रा. मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हैक्टर की दर से 15–20 दिन के अन्तर पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। भुट्टों की तुड़ाई तब करनी चाहिए जब भुट्टों को ढकने वाली पत्तियां सूखकर पीले भूरे रंग की हो जाती हैं। तुड़ाई के बाद भुट्टों को धूप में सूखाना चाहिए ताकि दानों की नमी कम हो जाये। दानों की 70–75 कुन्तल/हैक्टेयर उपज प्राप्त हो जाती है।